# पश्चिमी निमाड़ की लोक कला माध्यमों का अस्तित्व एवं भविष्य
## (बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजाति के विशेष संदर्भ में)

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग,
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,लखनऊ
पी–एच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत

## शोध–सारांश

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करुणा
ESTABLISHED 1996


**शोधार्थी**
पुष्पेन्द्र वास्कले
नामांकन संख्या 411/09

**शोध निर्देशक**
डॉ.रचना गंगवार
सहायक प्राध्यापक



जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग,
सूचना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
लखनऊ(उ0प्र0)
2017

# शोध संक्षेपिका

## पश्चिमी निमाड़ बड़वानी की लोक कला माध्यमों का अस्तित्व एवं भविष्य

## (बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजाति के विशेष संदर्भ में)

**प्रस्तावना–** निमाड़ मध्यप्रदेश के दक्षिण–पश्चिमी भाग दो क्षेत्रों में बसा हुआ है। पूर्वी निमाड़ और पश्चिमी निमाड़। पूर्वी निमाड़ में खण्ड़वा और बुरहानपुर के साथ हरदा जिलें का कुछ हिस्सा भी शामिल हैं। जबकि पश्चिमी निमाड़ में खरगोन व बड़वानी जिलें अवस्थित है। निमाड़ के संस्कृति के अहम् हिस्सें 25 मई 1998 और 15 अगस्त 2003 को अलग हो गए जब राज्य शासन की जिला पूर्नगठन नीति ने बड़वानी को खरगोन से और बुरहानपुर को खण्ड़वा से अलग कर नए जिलों की स्थापना की। 25 मई 1998 को बड़वानी और 15 अगस्त 2003 को बुरहानपुर से अलग होकर अस्तित्व में आये। खरगोन, बड़वानी, खण्ड़वा और बुरहानपुर की सीमाएँ अलग–अलग हुई, परन्तु निमाड़ की कला एवं संस्कृति से जुड़े पहलुओं पर कोई प्रभाव नहीं आया। बड़वानी एक सुदूर पहाड़ी क्षेत्र के लिए जाना जाता था। इससे यहॉ की भोली–भाली जनजातियों को बड़वानी जिला मुख्यालय बनने से सुविधा होने लगी।

मध्यप्रदेश के गठन के समय बड़वानी स्वयं जिला न होकर खरगोन का अनुभाग बना। बड़वानी एक सुदुर पहाड़ी ईलाका प्रांरभ से ही रहा है। इसकी पहाड़ी इलाकों में भील जनजाति की बारेला और भिलाला उपजातियॉ निवासरत है। यहॉ भील जाति भी निवास करती है। चूंकि बड़वानी अनुभाग के पहाड़ी अंचलों से खरगोन जिला मुख्यालय पर जानें में कई समस्याएँ आती रहीं है। इस कारण बड़वानी को जिला बनाने की मांगे हमेशा से उठती रहीं। आखिरकार प्रदेश शासन ने 25 मई 1998 में पश्चिमी निमाड़ का राजस्व अनुभाग बड़वानी, खरगोन से अलग होकर स्वयं भू जिला बना है। आज इन दोनों ही जिलों का अपनी–अपनी प्रशासनिक व्यवस्था व यहॉ की जनता को सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं।

बड़वानी जिला घोषित होने के बाद इसके राजस्व क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन शासन द्वारा किये गए। जिसमें पाटी, वरला और पानसेमल को राजस्व तहसील घोषित किया गया। वहीं अंजड़ को विकासखण्ड़ का दर्जा प्रदान किया गया। अब बड़वानी जिलें में 4 अनुभाग, 9 तहसीलें, 7 विकासखंड, 716 ग्राम पंचायते हैं। यहां 4 विधानसभा की सीटें हैं। बड़वानी 178 मीटर ऊॅचाई पर है। बड़वानी मध्यप्रदेश के दक्षिण–पश्चिमी भाग में स्थित है। बड़वानी के पूर्व में खरगोन जिला, पश्चिम में गुजरात राज्य कि सीमा जो सरदार सरोवर

बॉध से मिलती है। बड़वानी के उत्तर की सीमा नर्मदा नदी अपनी प्राकृतिक सीमा बनाती है वहीं उत्तर में धार, अलीराजपुर और दक्षिण में महाराष्ट्र राज्य की छूती है। सन् 1888 से 1930 तक बड़वानी के राजा रहें महाराजा रणजीत सिंह प्रथम विश्व युद्व के समय विश्व प्रसिद्व एम्बुलेंस कार लेकर पहली बार बड़वानी के क्षेत्रों में पहुचें थे।

नर्मदा घाटी के तलहटी के भू–भाग का नामकरण यहॉ की मुख्य वनस्पति नीम के कारण भी माना जाता है। यहॉ निवास करने वाली जनजातियों के घर नीम के आड़ में या इनके घरों के आंगन में नीम का पेड़ मुख्यतः पाया जाता है। इसके अलावा निमाड़ के नामकरण को लेकर और भी मत है जो बताते है। निमाड़ क्षेत्र मालवा क्षेत्र का दक्षिणी भाग है तथा यह मालवा के पठार के निचले हिस्से में बसा हुआ है। मालवा से निमाड़ आते समय विंध्यान्चल को पार करने के बाद निचला भू–भाग मिलता है। यही निमाड़ है। माड़ का अर्थ स्थान है जैसे– मारवाड़, मेवाड़ या कठियावाड़ आदि।

बड़वानी स्वतंत्रता आंदोलन के समय बड़ी उर्वरा भूमि रही है। यहॉ के लोक नायकों में टंट्या भील और भीमा नायक ने अंग्रेजो लड़ने में अदम्य साहस दिखाया था। यहॉ के ष्आदिवासियों ने अपनी सम्पूर्ण क्षमता से अपनी पटट्ी में अंग्रेजों का विद्रोह किया। टंट्या भील भी भीमा नायक का समकालीन रहा है। इतिहास की पलकों में इनके अलावा खाज्या नायक, आनंदा नायक, महादेव नायक और कालूबाबा के नाम इंदराज है। इनके पास अपनी–अपनी टोलियॉ थी। सभी अपने–अपने वर्ग के सरदार थे। भीमा नायक में अपार सांगठनिक क्षमता थी। वह जो कहता था उसे लोग दैवी आदेश की तरह मानते थे। इसके लिए उसने सदैव अपने को प्रमाणित किया। यहीं वो वजह है कि उसने महज तीस बरस की उम्र में धाबा बावड़ी के पास एक ऊंची पहाड़ी पर गढ़ी का निर्माण कर लिया था। इसकी तलहटी में उसका शस्त्रागार भी था। खंडहर की शक्ल में रूकी हुई वह इमारत ऋचाओं की तरह भीमा नायक के क्रांतिदर्शी व्यक्तित्व का ब्यौरा देती है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार प्रदेश की जनसंख्या 72626809 गणन हुई है। यहां 15316784 अनुसूचित जाति के नागरिक निवास करते है। पश्चिमी निमाड़ बड़वानी में जनजाति की जनसंख्या बहुतायत में है। बड़वानी में जिले की कुल आबादी 1385881 है इसमें 962145 जनजाति की आबादी है। बड़वानी प्रदेश के उन जिलों में शामिल है। जहां 50 प्रतिशत से अधिक जनजातिय आबादी है। पश्चिमी निमाड़ बड़वानी में भील जनजाति की भिलाला व बारेला उपजातियॉ निवास करती है। यहॉ यह जानना जरूरी है कि भीलों की चार मुख्य उपजातियॉ है। जिनमें 1 भिलाला 2, बारेला, 3 पटलिया व राठ्या है। इनके अलावा कई जातियॉ है जो अपने आप को भीलों के वंशज बताते है। भील जनजाति की उपजातियों ने पहले की तुलना में

उल्लेखनीय विकास किया है। प्रारंभिक समय में उपजातियॉ अपने–अपने स्थानों में जीवन संघर्ष करती हुई देखी गई थी। भिलाला निमाड़ के पठारी क्षेत्रों अर्थात नर्मदा नदी व उसके आस–पास के इलाकों में निवास करती रही है। इनका मुख्य कार्य कृषि आधारित क्रियाकलाप पर निर्भर रहकर जीवन निर्वाह करती रही। जबकि भील व बारेला सतपुड़ा पर्वत श्रेणी की घाटियों में ही मुख्यता से निवास कर रही है। भील जनजाति की एक उप जनजाति पटलिया जो झाबुआ, अलीराजपुर व धार जिलों में मुख्य रूप से रहती है। जबकि राठ्या खरगोन के सेगॉव व भगवानपुरा क्षेत्र में निवास करती है।

मध्यप्रदेश कला एवं संस्कृति के संदर्भ में समृद्व प्रदेश है। महान नाटककार कवि कालिदास इसी राज्य के थे। उज्जैन शहर कवि कालिदास की कर्म–स्थली थी। सूर्य सिद्वांत और पंच सिद्वांत यहीं रचित हुए। मुगल सम्राट अकबर के नवरत्नों में एक महान संगीतज्ञ मियां तानसेन राज्य के ग्वालियर शहर के थे। कवि कालिदास और मियां तानसेन की स्मृति में प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला तानसेन समारोह एवं अखिल भारतीय कालिदास समारोह विश्व प्रसिद्व हैं। मध्यप्रदेश एक आदिवासी बाहुल्य राज्य है। अतः यहां आदिवासी हस्तकला समृद्व होना स्वाभाविक ही है। आदिवासी हस्तकला में कई प्रकार के बर्तन, कपड़े, बांस द्वारा निर्मित कलाकृतियां आदि न केवल देशी–विदेशी पर्यटकों का विशेष आकर्षण है, अपितु विश्व भर में जाने जाते है। यहॉ के लोकगायन की अनूठी शैली हैं, वहीं भिन्न अवसरों पर किए जाने वाले लोकनाट्य अद्भुत है।

लोक कलाएं वे होती है जो किसी विशेष क्षेत्र की पारंपरिक सभ्यताओं व संस्कृति का नेतृत्व करती है। वास्तव में लोक कलाओं में उस समाज की वास्तविक पारंपरिक, सांस्कृतिक झलकियॉ परिलक्षित होती है। लोककला विभिन्न स्वरूपों में नजर आती है। पश्चिम निमाड़ बड़वानी के आदिवासियों नें लोक कलाओं को आज भी संजोए रखा है। लोककलाओं का स्वरूप प्राचीन काल से ही विभिन्न स्वरूपों में देखा गया है जो आज अपने विभिन्न आयाम लिये हुए है। लोक कलाएॅ विशेष क्षेत्र में विशेष पर्व व उत्सव के दौरान दिखाई देने लगती है। निमाड़ की सभ्यता एवं संस्कृति के लेखक श्री वसन्त निरगुणे ने निमाड़ को लोककलाओं का घर बताया है। उन्होनें निमाड़ का असली रूप, निमाड़ की परम्पराएॅ, निमाड़ की सभ्यता–संस्कृति, निमाड़ के भील किसान की दिनचर्या में आये लोक गीत, लोक संगीत, लोकगाथा, लोकशिल्प, लोकनाट्य, लोकव्यवहार और लोकचित्रों में बताया है। लोक कलाओं का सीधा अर्थ यह है कि वे प्राचीनतम कलाएॅ जो लोककथाओं, लोकनाट्यों ,लोकगीतों, लोकनृत्यों, लोकवाद्यों, लोकसंगीत तथा लोकचित्रों के रूप में लोक जीवन में युग–युग से चली आ रही है।

लोककला की परंपरा बड़ी प्राचीन है। यह किसी एक क्षेत्र में सीमित नहीं है। यह देश के कई हिस्सों राज्यों में अपनी पहचान बनाये हुए है। हमारे देश के कई राज्यों में लोक चित्रकला लोकप्रियता के नये आयम गढ़ चुकी है। बिहार की चित्रकला मधुबनी लोक चित्र शैली अपने आप में अलग पहचान है। इसके रंगों की कारीगरी देश ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में विचारोत्तेजक कर देती है। राजस्थान में पढ़ चित्र, आंध्रप्रदेश कलमकारी और चेरियाल पट्म, महाराष्ट्र की चित्र कथा और मालवा की चित्रकला, बुन्देलखंड की बुन्देली कलम आदि कला परंपरायें अपनी रंग रेखाये और मौलिक आकृतियों और रूपंकारों में अद्वितीय है। इसी तरह मध्यप्रदेश के पश्चिमी अंचल निमाड़ में पारंपरिक लोक कला की विविधता और विपुलता यहां के क्षेत्र को और धनी बनाती है। देश के इतिहास में निमाड़ की जनजातियां लोककला अनोखी और बड़ी अद्भुत है। यहां के लोककला के रूप को आधुनिक काल के व्यवहारिक जीवन में काफी लोकप्रिय और उपयोगी साबित हो रही है।

शोध क्षेत्र–

शोध क्षेत्र बड़वानी का पुराना इतिहास रहा है, मराठा शासन काल में 3051 वर्ग किलोमीटर वाले बड़वानी नगर को आवासगढ़ के नाम से जाना जाता रहा है। मध्यकाल भारत में बड़वानी 17वीं शताब्दीं में अंग्रेजी शासन के समय भोपावर एजेंसी के तहत् शासित हुआ करता था। देश के आजाद होने के बाद 1948 में यहॉ के राजा देवीसिंह राणा में बड़वानी को भारत और मध्यभारत का हिस्सा मान लिया। मध्यभारत में पश्चिम निमाड़ में खरगोन को ही माना जाता था, तत्कालिन समय में  बड़वानी एक अनुभाग के रूप में खरगोन जिलें में शामिल हुआ करता था।

25 मई 1998 बड़वानी स्वंय एक जिला बना। बड़वानी जिलें का कुल 542700 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल है। वर्तमान मे बड़वानी जिलें में 3 अनुभाग, बड़वानी जिलें में 4 विधान सभा क्षेत्र, 9 तहसीलें, 7 विकासखण्ड़, 576 ग्राम बसाहटे व इनके अतिरिक्त 392 हल्का और 9 राजस्व निरीक्षक केन्द्र के साथ 140 वन ग्राम है। इस समय आदिवासी बहुल जिलें में दो तरह से भूमि नजर आती है। एक पहाड़ी क्षेत्र के कटाव से बनी भूमि, दुसरी नर्मदा नदी के किनारे वाली भूमि जो पहाड़ी वाली भूमि की तुलना में काफी विस्तृत और उपजाऊ भूमि मानी जाती है। इसी क्षेत्र में अच्छे–अच्छे बागिचे भी है।

शोध अध्ययन–

भारत वर्ष की पहचान एक सभ्यता और सांस्कृतिक देश के रूप में आरम्भ से होती रहीं है। हमारे देश के प्रत्येक राज्य ओर उसके हरेक हिस्सें में संस्कृति भिन्नता लिए हुए है। यहॉ अनेकों धर्म, जाति और समुदाय के लोग निवास करते है और समय–समय पर अपने वार त्यौहारों को मनाते है। देश के कई हिस्सों में मनाए जाने वाले वार, त्यौहार, पर्व, उत्सव और लोक कलाएँ भी विशेष रूप से मनाई जाती है। प. निमाड़ बड़वानी भी उन्हीं में से छोटा सा भाग है। यहॉ वार, त्यौहारों के अलावा लोक कलाओं का वैभव गौरवांवित करने वाला है। पश्चिम निमाड़ बड़वानी की लोक कलाओं पर आज तक विस्तृत साहित्य लेखन का कार्य नहीं हुआ है। आज भी पश्चिम निमाड़ बड़वानी की अनुसूचित जनजाति की लोक कलाएँ अनछुई सी है। पश्चिम निमाड़ बड़वानी का अपना भू–क्षेत्र देश के प्रसिद्व राष्ट्रीय राजमार्ग न. 3 पर स्थित उत्तर–पूर्व नर्मदा नदी के किनारे के खलघाट नामक स्थान से प्रारम्भ होता है। पश्चिम में यह नर्मदा नदी के सहारे महाराष्ट्र–गुजरात राज्य की सीमा से लगा हुआ है। दक्षिण में पश्चिम निमाड़ बड़वानी महाराष्ट्र राज्य की सीमा तक विस्तार में है। जबकि उत्तर की ओर नर्मदा नदी प्राकृतिक सीमा निर्धारित करती है। बड़वानी जिलें में 3 अनुभाग, 9 तहसीलें, 7 विकासखंड, 716 ग्राम पंचायते हैं। यहां 4 विधानसभा की सीटें हैं। बड़वानी 178 मीटर ऊॅचाई पर है। बड़वानी मध्यप्रदेश के दक्षिण–पश्चिमी भाग में स्थित है। मध्यप्रदेश के गठन के समय बड़वानी स्वयं जिला न होकर खरगोन का अनुभाग बना। बड़वानी एक सुदुर पहाड़ी ईलाका प्रांरभ से ही रहा है। इसकी पहाड़ी इलाकों में भील जनजाति की बारेला और भिलाला उपजातियॉ निवासरत है। यहॉ भील जाति भी निवास करती है। चूंकि बड़वानी अनुभाग के पहाड़ी अंचलों से खरगोन जिला मुख्यालय पर जानें में कई समस्याएँ आती रहीं है। इस कारण बड़वानी को जिला बनाने की मांगे हमेशा से उठती रहीं। आखिरकार प्रदेश शासन ने 25 मई 1998 में पश्चिमी निमाड़ का राजस्व अनुभाग बड़वानी, खरगोन से अलग होकर स्वयं भू जिला बना है। आज इन दोनों ही जिलों का अपनी–अपनी प्रशासनिक व्यवस्था व यहॉ की जनता को सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं।

शोध उद्देश्य–

(अ) पश्चिमी निमाड़ की जनजाति के लोककला माध्यमों का अध्ययन करना।

(ब) भील जनजाति के अनछुएँ पहलुओं पर प्रकाश डालना।

(स) पश्चिम निमाड़ की जनजाति की लोककला माध्यमों के भविष्य का अध्ययन।

शोध क्षेत्र बड़वानी का पुराना इतिहास रहा है, मराठा शासन काल में 3051 वर्ग किलोमीटर वाले बड़वानी नगर को आवासगढ़ के नाम से जाना जाता रहा है। मध्यकाल भारत में बड़वानी 17वीं शताब्दीं में अंग्रेजी शासन के समय भोपावर एजेंसी के तहत् शासित हुआ करता था। देश के आजाद होने के बाद 1948 में यहॉ के राजा देवीसिंह राणा में बड़वानी को भारत और मध्यभारत का हिस्सा मान लिया। मध्यभारत में पश्चिम निमाड़ में खरगोन को ही माना जाता था, तत्कालिन समय में  बड़वानी एक अनुभाग के रूप में खरगोन जिलें में शामिल हुआ करता था।

25 मई 1998 बड़वानी स्वंय एक जिला बना। बड़वानी जिलें का कुल 542700 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल है। वर्तमान मे बड़वानी जिलें में 3 अनुभाग, बड़वानी जिलें में 4 विधान सभा क्षेत्र, 9 तहसीलें, 7 विकासखण्ड़, 576 ग्राम बसाहटे व इनके अतिरिक्त 392 हल्का और 9 राजस्व निरीक्षक केन्द्र के साथ 140 वन ग्राम है। इस समय आदिवासी बहुल जिलें में दो तरह से भूमि नजर आती है। एक पहाड़ी क्षेत्र के कटाव से बनी भूमि, दुसरी नर्मदा नदी के किनारे वाली भूमि जो पहाड़ी वाली भूमि की तुलना में काफी विस्तृत और उपजाऊ भूमि मानी जाती है। इसी क्षेत्र में अच्छे–अच्छे बागिचे भी है।

प.निमाड़ बड़वानी में पानसेमल, निवाली, सेंधवा, पाटी और वरला आदिवासी बहुल तहसीलें है। जबकि बड़वानी, राजपुर और ठीकरी आंशिक रूप से आदिवासी क्षेत्र है। शोध के लिए 576 गॉवों में से 58 गावों को चयन किया गया। शोध के लिए उन गॉवों का चुनाव किया गया जो शोध क्षेत्र के दुर्गम क्षेत्रों (पहाड़ी अंचल) के रूप में जाने जाते है व उन गॉवों का भी चुनाव किया गया जो सांस्कृतिक दृष्टि से धनी रहें है तथा उन गॉवों को शोध के लिए चयन में शामिल किया गया जो किसी कारण से लोकप्रिय रहें है।

शोध प्रविधि– प्रस्तुत विवरणात्मक व अन्वेषणात्मक (क्पेबतपचजपअम ंदक म्गचसवतंजवतल) शोध एक गुणात्मक एवं मात्रात्मक (मिश्रित) अध्ययन हैं। जिसमें सर्वेक्षण पद्वति एवं अवलोकन चिधि का उपयोग कर ऑकड़ों का संग्रह किया गया है। प्रस्तुत शोध में मित्रित निदर्शन विधियों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्त्रोत के लिए उददे्श्यपूर्ण निदर्शन के आधार पर बड़वानी जिलें की सात तहसीलों में से 58 गॉवों का चयन किया गया है। इन गॉवों का चयन उददे्श्यपरक तथा न्यायसंगत निदर्शन के आधार पर किया गया है, क्योंकि इस क्षेत्र की जनजातियों पर कार्य करने वाले शोधार्थी, साहित्यकार सरकारी कर्मचारी तथा समाजसेवियों से विचार विमर्श करने के उपरांत शोध के लिए उन गॉवों का चुनाव किया गया जो बड़वानी जिलें में दुर्गम क्षेत्रों (पहाड़ी अंचल) के रूप में जाने जाते हैं तथा सांस्कृतिक दृष्टि से धनी है साथ ही ये गॉव अपनी लोक कलाओं के लिए लोकप्रिय हैं।

शोध क्षेत्र बड़ा होने के कारण 58 गॉवों की जनसंख्या से समानुपातिक, उद्देश्यपरक तथा स्नोंबॉल सैंपलिंग का उपयोग कर कुल 800 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। 800 उत्तरदाताओं से सर्वेक्षण पद्वति के आधार पर अनुसूची के माध्यम से ऑकड़ों का संकलन किया गया। शोध क्षेत्र सें 100 ऐसे व्यक्तियों का भी चयन किया गया जो चयनित गॉवों में अपने कार्यो के लिए प्रसिद्व या वहॉ के स्थानीय नेता है। 100 विशेष चयनित उत्तरदाताओं से साक्षात्कार के माध्यम से यहॉ कि लोककलाओं के विषयमें जानकारी प्राप्त की गई। इसी के साथ ऐसे 50 व्यक्तियों का भी साक्षात्कार लिया गया जो चयनित क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति पर साहित्य निर्माण कर रहें है या शोध कार्य कर रहें है। प्रस्तुत शोध की प्रत्येक इकाई का चयन स्नोबॉल सैंपलिंग तथा उद्देश्यपरक के माध्यम से किया गया हैं।

सर्वेक्षण पद्वति के आधार पर अनुसूची तथा साक्षात्कार के माध्यम से ऑकड़ों का संकलन किया गया है। शोध के उददे्श्यों के अनुरूप अवलोकन विधि का उपयोग किया गया है। अवलोकन के दौरान सहभागी अवलोकन, असहभागी अवलोकन तथा समूह सहभागी अवलोकन विधियों को अपनाया गया है। शोधार्थी ने जुलाई 2011 से से दिसम्बर 2011 तक चयनित गॉवों में लगातार रहकर वहॉ कि अनुसूचित जनजाति की दिनचर्या, संस्कृति, तीज–त्यौहार, मान्यताओं तथा उत्सवों का अवलोकन किया हैं। इसके बाद भी समय–समय पर इन जनजातियों के त्यौहारों तथा उत्सवों में सम्मिलित होकर शोध के उददेश्यों के अनुरूप अवलोकन किया है। ऑकड़ों का संकलन जनवरी 2015 से नवम्बर 2015 के मध्य किया गया है। द्वितीयक ऑकड़ों के लिए जनजातीय साहित्य, पत्र–पत्रिकाओं, सरकारी, प्रतिवेदनों, आदि का उपयोग किया गया हैं।

शोध प्रश्न : प.निमाड़ बड़वानी की लोक कलाओं पर अभी तक केन्द्रित होकर इनके विविध पहलुओं के विस्तार में जाकर शोध कार्य का अभाव रहा है। इस शोध प्रबंध के माध्यम से मेरी पूरी कोशिश रही की लोककला संस्कृति के विविध पहलुओं के विस्तार में जाकर तथ्यात्मक विश्लेषण अध्ययन और भविष्य की संभावनाओं को उजागर कर सकूॅ। प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों के साथ–साथ पूरक प्रश्न है जिनके बारे में भी जानना जरूरी है।

1. यहॉ कौन–कौन सी लोक कलाऍ है? जिनका उपयोग सामान्य बोली के रूप में आदिम जाति समाज (प्रिमिटिव ट्रॉयब्स) सदियों से एक संचार माध्यम की तरह करता आ रहा है?

2. प.निमाड़ बड़वानी के दुर्गम क्षेत्रों में निवास करने वाली आदिम जाति के दैनिक कार्य किस तरह के होते हैं तथा ये जीवन निर्वाह के लिए क्या करते है?

3. क्या आदिम जाति के लोक कलाओं का विस्तार प्रादेशिक या क्षेत्रीय स्तर तक ही है या वैश्विक स्तर पर इनका विस्तार हुआ है?

4. आदिम जाति की ऐसी कोई लोक कला जो आज भी शोध के अभाव में सामने नहीं आ सकी है?

5. यहॉ कौन सी लोक परंपराएँ है जो आदिकाल से निमाड़ की सभ्यता का आधार बनी हुई है? जिनका स्वरूप उसी तरह देखने को मिलता है जो प्राचीन समय से रहा है?

6. आदिम समाज के ऐसे कोई लोक नृत्य व संगीत जो अन्य समाजों में खुब लोकप्रिय हुए है?

7. प.निमाड़ बड़वानी की लोक कलाओं में ऐसा कोई पक्ष है जिसके कारण आदिवासी समाज में एकता और संगठित रूप नजर आता है?

8. विकासशील दौर के कारण कई तरह के परिवर्तन हुए है, क्या इससे आदिम जाति की लोक कलाओं पर भी प्रभाव पड़ा है?

9. आदिम जाति संस्कृति में आज किस तरह के बदलाव देखने में आ रहें हैं? वे कौन से कारक रहे है? जिनके कारण आदिम जाति की लोक कलाओं में बदलाव आया है?

10. क्या प.निमाड़ बड़वानी की आदिम जाति की लोक कलाओं के लक्षण या तरीका किसी अन्य संस्कृति में देखने को मिलता है?

11. क्या आदिम समाज आज जिन प्रतिमानों को मानते हुए लोक कलाएँ मना रहा है क्या भविष्य में भी यहीं स्वरूप होगा? क्या आदिम समाज की लोक कलाओं का कोई भविष्य होगा या परिवर्तन के दौर में इनका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा ?

निर्धारित शोध क्षेत्र का डेमोग्राफिक डाटा–

बड़वानी जिलें के चयनित गॉवों का तहसीलवार डेमोग्राफिक डाटा :–

| विकासखण्ड /तहसील़ | कुल चयनित गॉव | चयनित गावों में घरों की संख्या | चयनित गॉव में कुल जनसंख्या | चयनित गावों में कुल जनजातीय जनसंख्या | चयनित गावों में जनजतीय महिला | चयनित गॉवों में जनजातीय पुरूष |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बड़वानी | 13 | 3172 | 17461 | 16110 | 8042 | 8068 |
| पाटी | 11 | 3760 | 22537 | 20843 | 10369 | 10474 |
| ठीकरी | 09 | 3302 | 15876 | 12074 | 5943 | 6131 |
| राजपुर | 07 | 3131 | 16773 | 12576 | 6294 | 6282 |
| पानसेमल | 05 | 2373 | 14429 | 6010 | 3566 | 3658 |
| निवाली | 04 | 1478 | 8785 | 7922 | 3873 | 4049 |
| सेंधवा | 09 | 4592 | 28297 | 24909 | 12452 | 12457 |
| कुल योग | 58 | 21808 | 124158 | 101658 | 50539 | 51119 |

निष्कर्ष–

उद्देश्यों का परीक्षणः

उद्देश्य 1 : पश्चिमी निमाड़ बड़वानी की जनजाति के लोक कला माध्यमों का अध्ययन।

शोध के दौरान प. निमाड़ बड़वानी की लोक कला माध्यमों के अध्ययन में प्रयुक्त की गई प्रविधि में यहॉ कि लोक कला के सम्बंध में कई प्रकार के तथ्य सामने आये है। यहॉ कि आदिम जातियों के अध्ययन के लिए अनुसूची साक्षात्कार, प्रश्नावली और साक्षात्कार के माध्यम से लोक कलाओं को जानने के प्रयास किए गए है। अनुसूची साक्षातकर के प्रश्न संख्या 1 व 2 में यहॉ निवास करने वाली जाति के बारे में यह जानने के प्रयास किए गए कि ये जनजातियॉ किस क्षेत्र से यहॉ आकर बसी है और क्या ये यहॉ की मुल निवास करने वाली जनजाति है। यहॉ 24 प्रतिशत ऐसे नागरिक है जो मूल निवासी है और 64 प्रतिशत लोग किसी अन्य क्षेत्रों से यहॉ आकर बसे है। यहॉ 65 प्रतिशत नागरिक राजस्थान और 27 प्रतिशत गुजरात से आकर बसे हैं। इसी तरह आदिम जाति के पूर्वजों या कुल में प्रारम्भ से बनाई जा रही लोक कलाओं को जानने के

लिए प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 3 और अनुसूची के प्रश्न संख्या 9 के जानकारी और तथ्य बताते है कि यहॉ आदिम जाति में गोंदना, पिठौरा, गाता, इंदल, मान, मांड़ना, साईला के अलावा संजा, गणगौर व गोरधन उनके पूर्वजों द्वारा मनाई जाती रही है।

यहॉ की लोक कलाओं तथा लोक कलाओं के विभिन्न पक्षों के बारे में जानने के लिए प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 5, 6 और 7 में आदिम जाति बड़वानी की ऐसी कोई लोक कला जिसे पूर्वज मनाते रहे है, परन्तु आज किसी कारणों से नहीं मना रहे है। यहॉ लोक कलाओं को बनाने व मनाने के स्थल, किनके द्वारा बनाये जाते है के बारे में पुछा गया तो पता चला है कि प. निमाड़ में की भील जनजाति की सभी शाखाओं में लोक कला का उपयोग घर के बाहर और भीतर दोनों ओर प्रमुखता से होता है। यहॉ मांडना, पलासला, गोंदना, पिठौरा, इंदल, संजा, ढोढय्या, साईला, गातला, आदि लोक कलाएँ मनाई जाती है। यहॉ चौक मांडनें की एक लंबी परम्परा रहीं हैं, भील जाति के सभी घरों परिवारों में विशष अवसरों पर चौक मांडना घर परिवार की कन्याओं में कौतुहल का विषय रहा है। क्योंकि आदिम जाति में कन्या को घर परिवार में खुॅशी और देवि के स्वरूप के लिए शुभ माना जाता है। प. निमाड़ बड़वानी के जनजातिय अनुपात में कन्याओं की दर अधिक है। लेखन कार्य करने वाले वसंत निरगुणे ने मांडने की परम्परा को यहॉ राजस्थान की मांड़ना लोक परम्परा से मिलती–जुलती बताया है। प. निमाड़ बड़वानी में 64 प्रतिशत लोगों ने बताया है कि यहॉ उनके पूर्वजों द्वारा पलायित होना बताया है। मगर यहॉ यह बताना थोड़ा मुश्किल हुआ है कि किस काल में यहॉ आकर बसे है। फिर भी एक अनुमान के मुताबिक राजपुतों व ठाकुरों और गैर राजपुतों ठाकुरों के बीच सामंजस्य बिगड़ने के बाद वहॉ से पलायित होना पड़ा होगा। यहॉ राजस्थान और गुजरात के क्षेत्रों से पलायन होकर आना बताता है।

इनके अलावा भील जनजाति में अनेक लोक पर्व भी मनाएँ जाते है। भील व बारेलाओं में पिठौरा और भिलालाओं में जिरोती व चौक लोकचित्र कला बनाई जाती है। साथ ही लोक कलाओं कें आयोजन में घर की महिलाओं के साथ–साथ घर की कन्याओं और बालको सहित घर के पुरूषों द्वारा भी मुख्य रूप से सहयोग किया जाता है। यहॉ विशेष अवसरों पर भांति–भांति की लोक चित्रकला बनाई जाती है।

प्राचीन समय से आदिम जाति में जिन लोक कलाओं के अस्तित्व मौजुद है व उन लोक कलाओं के प्राचीन स्वरूपों के बारे में तथा उनमें हुए बड़े परिवर्तन को जानने के प्रयास प्रश्न संख्या 10 और 11 में किए गए तो तथ्य प्राप्त हुए कि यहॉ आज भी पूर्व की भांति मांड़ना, पिठौरा, गोंदना, गाता, हिंदला, संजा,

पलासला, गोरधन, गणगौर, दिवासा, भंगोरिया, पोला, गल व नवई विशेष अवसरों पर पुरे उत्साह के साथ प्राचीनता से मेल खाते बदलाव रूप में सामने है।

प.निमाड़ बड़वानी की आदिम जाति में जीवन यापन में इनकी गतिविधियों, यहॉ की फसलों, व्यवसाय, शादी पर्व मेनमान नवाजी तथा भोंज्य पदार्थों के उपयोग के बारे में इनकी मान्यताओं को जानने के लिए प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 13, 14 व 15 से जानकारी मिली है। आदिम जाति के दूर्गम क्षेत्रों में कुछ ऐसी फसलों की खेती होती रहीं है जैसे साळ और कुल्थियॉ का प्राचीन शास्त्रों में भी उल्लेख मिलता है। वैसे यहॉ ज्वार, बाजरा, मक्का, उड़द, मूंग, अरहर, मोठ, खरबुज, तरबुज के साथ कुछ वर्षो से कपास और गेहूँ की फसल भी मुख्यता से लेना प्रारम्भ कर दी है। भील बारेला और भिलाला मुख्य रूप से कृषिगत कार्यों में सलंग्न रहते है, ये अपने वनीय खेतों में समय निकालकर आखेट भी करना पसंद करते है, क्योंकि इनके निवास स्थान मुख्यता से नदी–नालों के किनारे–किनारे व्यवस्थित है, इसलिए मछली पकड़ना और वनों के कारण पशुपालन भी आवश्यकता के साथ–साथ किया जा रहा हैं। झूमिंग खेती के समय यहॉ ''पाठ'' और ''मोठ'' जल सिंचाई की महत्वपूर्ण तकनीक के अस्तित्व में रहे है जिनका इस्तेमाल बखूबी सामाजिक रूप से किया गया। आज यह तकनीक बहुत ही कम स्थानों पर सीमित सी हो गई है। हालांकि आजकल दूर्गम क्षेत्रों में देखी जा सकती है।

भील जनजाति मुख्य अवसरों पर पूर्व निधारित भोज्य पदार्थ का उपयोग करते है। ये शॉकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार से मेहमान नवाजी करते है। यह निर्भर करता है कि अवसर कौन सा है। जैसे मान, आणा, गाता पूजा, इंदल पूजा अवसरों पर मुख्य रूप से मांस और बलि देकर सामूहिक रूप से भीजन करते है।

उद्देश्य 2: भील जनजाति के अनछुऍ पहलुओं पर प्रकाश डालना।

शोध में प्रयुक्त विधि से भील जनजाति के अनछुऍ पहलुओं को जानने के प्रयास किए गए। अवलोकन के दौरान कई ऐसे पहलु नजर आए जो आज तक समाज के सामने नहीं आ सके है, जिनमें मांड़ने, पलासला, साईला, नेवता, मान, आणा, पाळी नृत्य, हिंदला आदि है। इसके अलावा प्रश्न संख्या 14 और 15 से झूमिंग खेती करने वाले आदिम मानव की जल संचार नहर के महत्वों का पता चला है। अनुसूची के माध्यम से प्रश्न संख्या 18,19 व 20 के द्वारा अनछुऍ पहुओं के बारे में जानकारी प्राप्त की गई। इसी तरह साक्षात्कार प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 2 और 14 में भील जनजाति के अनछुऍ पहलुओं के बारे में जानकारी

संकलित की गई। शोध के दौरान कई लोक कला माध्यम सामने आए है जिन पर आज तक विस्तार से शोध कार्य नहीं किया गया है।

उद्देश्य 3: प.निमाड़ की जनजाति की लोककला माध्यमों के भविष्य कर अध्ययन करना।

प.निमाड़ बड़वानी के आदिम लोक कला माध्यमों के भविष्य के विषय में साक्षात्कार प्रश्नावली के प्रश्न संख्या 13 और साक्षात्कार अनुसूची की प्रश्न संख्या 6 से जानकारी मिलती है कि आधुनिक दौर कई तरह के परिवर्तन देखने में आए है। इन परिवर्तनों का प्रभाव आदिम जातियों के क्रियाकलापों पर भी पड़ा है। निमाड़ संस्कृति और साहित्य के लेखक श्री वसंत निरगुणे ने बताया कि लोक जब जीवन के सत्य और मुल्यों के सार को पा लेता है, तब उन सत्यों और मुल्यों को संरक्षित करने की प्रविधियों की तलाश भी जीवन में से होती है, उनमें से ही लोक कलाओं का जन्म होता है। उनकी निरंतरता बनाएँ रखने के लिए उसे पूजा, अनुष्ठान, कथा, गीत, नृत्य, चित्र मिथक परम्परा पर्व त्यौहार एवं कला संस्कार आदि मिथको को जोड़ दिया जाता है। प्रश्नावली के प्रश्न 13 से तथ्य प्राप्त होते है कि लोक कलाएँ कभी समाप्त नहीं होती है। उसका रूप में बदलाव आ सकता है। असिस्टेंट प्राध्यापक और आदिवासी एकता परिषद के अध्यक्ष डॉ. प्रकाश सोलंकी का कहना है कि यह सत्य है कि लोक कलाओं के उपयोग में बहुत बदलाव आया है। आज कई लोक कलाओं के आयोजन में समाज की लोक कलाओं को लेकर प्रवृत्तियॉ कम हुई है, परन्तु ऐसा नहीं है कि समाप्त हो गई है, उनका बदला स्वरूप सामने हैं।

शोध का परिणाम–

सर्वेक्षण से प्राप्त ऑकड़ों के विश्लेषण के आधार पर यह स्थिति सामने आई है कि प.निमाड़ बड़वानी में आदिम काल से यहॉ निवास करने वाली जनजाति अपने लोक कला माध्यमों के उपयोग से सामाजिक मुलभुत संचार अवधारणा को बनाए हुए है। यहॉ का जनजातिय समाज समय–समय पर लोक कलाओं के द्वारा सामाजिक एकता के साथ सामुदायिक गतिविधियों से संचालित होता आया है। यहॉ अनेक लोक चित्रकला, लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक वाद्य और लोक पर्व विशेष अवसरों पर बनाई जाती है। यहॉ शायद ही ऐसा कोई अवसर होता है जब लोक कलाओं से अलग होकर जीवन जिया जाता है।

प.निमाड़ बड़वानी जिलें की जनजातिय लोक कला संस्कृति वो सशक्त माध्यम है। जिसके सहारे यहॉ की आदिम जाति अपने पुरे विश्वासों और मान्यताओं के फैलाव के साथ सामने आई है। इनके लोक कला माध्यम वास्तविक रूप से इनके जीने के आधार है। आदिम जातियों के संचार माध्यम इतने व्यावहारिक

और उपयोगी है की इनके जीवन से भिन्न होकर नही देखा जा सकता है। यहॉ कि जनजाति अपने ही लोगों में खुशहाल, और प्रगतिरत जीवन यापन कर रही है। यहॉ ऐसा कोई समय नहीं होता जब इनकी लोक कला और संस्कृति के लक्षण न दिखाई दें। शोध में कुछ ऐसे तथ्य और जानकारी प्राप्त हुई है जो उल्लेखनीय विश्लेषण और विवेचना के लिए उद्देशीय तथ्य साबित होते है। शोध क्षेत्र में वहॉ तक पहुॅच पायॉ, जहॉ तक अब तक प. निमाड़ बड़वानी पर केन्द्रित साहित्य निर्माण नहीं पहुॅच पाया है।

शोध में कुछ ऐसे तथ्य सामने आए है जो शोध उद्देश्यों को पुरा करने में सक्षम है। शोध के दौरान प. निमाड़ बड़वानी की लोक संस्कृति अपने पुरे फैलाव के साथ सामने आई है। शोध में ऐसे कई तथ्य सामने आए है, जिन पर अभी तक साहित्य निर्माण कार्य नहीं हुआ है। भीलों की लोक संस्कृति घृणा की शिकार हुई है। केवल आदिम जातियों की संस्कृति को मानकर अन्य समाज से कटी हुई प्रतीत होती है। हालांकि हाल ही के वर्षो में आदिम जाति के लोक गीतो और संगीत को अन्य समाजों ने खुब अपनाया है।

शोध क्षेत्र में सदियों से दूर्गम पहाड़ियों पर निवास करने वाली जनजाति प्रकृति के करीब रहने वाली जनजाति प्रकृति प्रेरक लोक कलाओं में सलंग्न रहती है। पूर्व के पदचिन्हों को देखकर लगता है कि जनजातिय संस्कृति में आधुनिक विकास के प्रभाव इन पर भी पड़े है। इनकी लोक कलाओं में आकस्मिक रूप से बदलाव नजर आए है। भील जनजाति प्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति है। यह केवल सबसे बड़ी ही नहीं बल्कि कला व संस्कृति के लिहाज से समृद्व जनजाति भी है। दुर्गम क्षेत्रों में निवास करने वाली इस जनजाति पर आधारित जीवन शैली पर पर्याप्त साहित्य उपलब्ध नहीं है। अभी तक इनकी संस्कृति, लोक कला और जीवन कला के अनेक पहलुओं पर विस्तृत शोध कार्य नहीं हुआ है।

पश्चिमी निमाड़ के जनजातीय समाज में भील तथा भीलों की उपजातियॉ भिलाला और बारेला मुख्य हैं। भीलों और बारेलाओं के निवास स्थान अति दुर्गम पहाड़ियों में दूर–दूर हैं, जबकि भिलाला उपजाति समतल और घनी आबादी में बसी हुई है। भील और बारेलाओं का स्थान चाहे दूर–दूर हो मगर यह उनके परिवार में स्वतंत्रता का प्रतिक मालूम होता है। भील और बारेलाओं की संस्कृति और लोक कलाओं में समानता है जबकि भिलालाओं की संस्कृति और लोक कलाओं में थोड़ा अंतर जरूर दिखाई देता है, मगर फिर भी भील, बारेला और भिलाला उपजनजातियों में आज भी कई समानताएॅ नजर आती हैं।

सदियों से देश की पर्वत श्रृंखलाओं व कंदराओं में संस्कृति को विकसित करने वाली और सभ्यता को जन्म देने वाली आदिम जातियॉ ही है। इनका कोई लिखित साक्ष्य नहीं है परन्तु समाज में आज भी कहीं

तिलक तो कहीं स्वास्तिक, बाबादेव, कुलदेवी–देवताओं आदि के चिन्ह दिखाई पड़ते है। 11695 वर्ग किलोमीटर में फैले पश्चिमी निमाड़ में 2011 की जनगणना के अनुसार 1692314 जनजाति के नागरिक है। यहॉ बड़े पैमाने पर लोक कला आधारित जीवनयापन से परिपूर्ण है। भील जाति में हास्य और व्यंग आधारित जीवन में लोक कला का अपना महत्व है। निमाड़ में लोक कला गम्मत और खियाल (ख्याळ) आज अपने भविष्य को तलाश रहीं है। जनजातिय भिलालाओं के जीवन में गम्मत और खियाल न सिर्फ मनोरंजन का साधन रहा बल्कि समाज को एकजुटता प्रदान करने का साध्य भी है। भिलालाओं के जीवन में हास्य–व्यंग्य के साथ कृषिगत कार्यो में एक नवीनता प्रदान करती है। आज जब संचार माध्यमों ने समाज को विदेशी संस्कृति के दर्शन कराए हैं जिसके कारण समाज का एक वर्ग संस्कृति से दूर जाता नजर आने लगा है, मगर वहीं आदिवासी समाज कई दशकों से संचार माध्यमों से दूर रहा है। आदिवासी समाज कभी भी अपनी लोक कलाओं से अलग नहीं रहा। तभी तो आदिवासी समाज आज इंदल, भगौरियॉ, गातला, गणगौर, गोंदना, पलासला, ढोढय्या, दिवासा, दिवाली, साईला, फाग, मान और ऐसे ही अन्य लोक संस्कृति के मार्गो पर चलता नजर आता है।

(अ) पश्चिमी निमाड़ की जनजाति के लोककला माध्यमों का अध्ययन

भील जनजाति प्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति है। यह केवल सबसे बड़ी ही नहीं बल्कि कला व संस्कृति के लिहाज से समृद्व जनजाति भी है। दुर्गम क्षेत्रों में निवास रहने वाली इस जनजाति पर आधारित जीवन शैली पर पर्याप्त साहित्य उपलब्ध नहीं है। अभी तक इनकी संस्कृति, लोक कला और जीवन कला प्रत्येक इकाई पर विस्तृत शोध कार्य नहीं हुआ है। पश्चिमी निमाड़ के जनजातीय समाज में भील तथा भीलों की उपजातियॉ भिलाला और बारेला मुख्य है। भीलो और बारेलाओं के निवास स्थान अति दुर्गम पहाड़ियों में दूर–दूर है, जबकि भिलाला उपजाति समतल और घनी आबादी में बसी हुई है। भील और बारेलाओं का स्थान चाहे दूर–दूर हो मगर यह उनके परिवार में स्वतंत्रता का प्रतिक मालुम होता है। भील और बारेलाओं की संस्कृति और लोक कलाओं में समानता है जबकि भिलालाओं की संस्कृति और लोक कलाओं में थोड़ा अंतर जरूर दिखाई देता है, मगर फिर भी भील, बारेला और भिलालाओं में आज भी कई समानताऍ नजर आती है। इन तीनों जातियों में मानविकी की मानसिकता समान रूप से कुट–कुट कर भरी है, यदि इन तीनों को एक साथ एक ही समय पर शिक्षा और स्वास्थ्य मिल पाती तो प्रदेश के विकास में गुणात्मक योगदान दे पाते। आज भी ये तीनों ही बड़वानी जिलें के विकास की रीढ़ है।

सदियों से देश की पर्वत श्रृंखलाओं व कंदराओं में संस्कृति को विकसित करने वाली और सभ्यता को जन्म देने वाली आदिम जातियॉ ही है। इनका कोई लिखित साक्ष्य नहीं है परन्तु समाज में आज भी कहीं तिलक तो कहीं स्वास्तिक, बाबादेव, कुलदेवी–देवताओं चिन्ह दिखाई पड़ते है। लोक कलाओं के विकास के अनेकों अंतराल के बाद आज भील आदिम जाति मध्यप्रदेश के पश्चिमी कोने में विस्तार से आवासित है। 11695 वर्ग किलोमीटर में फैले पश्चिमी निमाड़ में 2011 की जनगणना के अनुसार 1692314 जनजाति के नागरिक है। यहॉ बड़े पैमाने पर लोक कला आधारित जीवनयापन से परिपूर्ण है। भील जाति में हास्य और व्यंग आधारित जीवन में लोक कला का अपना महत्व है। निमाड़ में लोक कला गम्मत और खियाल (ख्याळ) आज अपने भविष्य को तलाश रहीं है। जनजातिय भिलालाओं के जीवन में गम्मत और खियाल न सिर्फ मनोरंजन का साधन रहा बल्कि समाज को सांगठनिक एकजुटता प्रदान करने का साध्य भी है। भिलालाओं के जीवन में हास्य के साथ व्यंग कृषिगत कार्यो में एक नवीनता प्रदान करती है। आज जब संचार माध्यमों ने समाज विदेशी संस्कृति के दर्शन कराए हैँ तो अपनी संस्कृति को दूर जाता नजर आने लगा है, मगर वहीं आदिवासी समाज कई दशकों से संचार माध्यमों से दूर रहा है। आदिवासी समाज कभी भी अपनी लोक कलाओं से अलग नहीं रहा। तभी तो आदिवासी समाज आज इंदल, भगौरियॉ, गातला, गणगौर, गोंदना, पलासला, ढोढय्या, दिवासा, दिवाली, साईला, फाग, मान और ऐसे ही अन्य संस्कृति के मार्गो पर चलता नजर आता है।

## लोक वाद्य एवं लोकनृत्य

पश्चिम निमाड़ की दुगर्म पहाड़ियों से गुजरते हुए बांसुरी, ढोल, फेफरिया, घांघू व मांदल की थाप निश्चित ही सुनाई पड़ती है। यहां की अनेको लोक कलाओं और उत्सवों में मुख्य रूप से इन्ही लोक वाद्यों का संगीत वादन होता है। खाली समय या फसलों के पक कर तैयार होने पर भी भी त्यौहार या पर्व मनाए जाते है, सभी इन्हीं के द्वारा बनाए गए संगीत सॉजों का उपयोग होता है। यहॉ शाम के वक्त भोजन के बाद के समय लोक संगीत परवान चड़ने लगता है। बोकराटा पानसेमल एवं निवाली के क्षेत्रों जनजातिय संगीत की मधुर ध्वनि पहाड़ी अंचल को मधुरम बना देती हैं। बोकराटा के चेरवी (गॉव का नाम ) के फल्या (गावॅ की इकाई) फॉग व मानसून के मौसम में शोध कार्य के लिए जाते वक्त पहाड़ी, वनों और हरियाली से आच्छादित पगडंडियों से निकलते वक्त बांसुरी की स्वर लहरियां कानों में रस घोल रही थी। थोड़ी दूर चलने के बाद 'झरकल नदी' नर्मदा नदी की पहाड़ी सहायक नदी प्रदेश की सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला की ओर से निकलने वाली अंतिम नदी है। झरकल नदी के किनारे के गांव में शाम में जब चांद निकल आया था। गांव के युवक

व युवतियां संगीत वाद्यों को लेकर गीत–संगीत की तैयारियों में जुटे हुए देंखे जा सकते है। यहॉ की भील जाति के युवक स्वंय के द्वारा ही बनाया गया घांघु को सदैव अपनी पगड़ी में खौंसे हुए रखता है। घांघु के अलावा गोफन भी पगड़ी को गिरने से बचाने के लिए बॉधे रखता है। युवक मौका पाते ही खेत में, राह में या बाजार हाट जाते समय इस घांघु को बजाकर मनोरंजन करते हुए ऊंची और लम्बी पहाड़ियों पर आसानी से चलते चले जाते है। यहॉ की जनजाति दुर्गम पहाड़ियों और नर्मदा नदी के आब से बनें क्षेत्रों में जीवन यापन कर रही है। जहॉ–जहॉ पठारी क्षेत्र मिलता है वहॉ की भूमि सदियों सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला से अपरदित होकर स्थापित हुई है। यहॉ पूर्व में घना जंगल होने से प.निमाड़ की भूमि पर्याप्त उर्वरा वाली उपजाऊ मिलती है। नर्मदा नदी के किनारे वाले हिस्सों में कृषि की सभी शाखाओं के लिए भूमि मूफिद है। यहॉ का दवाना नामक गॉव उद्यानिकी की फसल के लिए दूर–दूर तक पहचान बनाए हुए है। यहॉ गन्ना, पपीता, नींबू, अमरूद, केला, अदरक, आदि फसलों के लिए अत्यंत उपयोगी एवं उपजाऊ भूमि है।

ऐसे ही मोरगुन, लोनसरा, बालकुंआ और रेहगुन गांवों में शोध कार्य हेतू जाते वक्त बेलगाडी, सायकल और मोटर सायकल से सवार होकर घांघू ( मुंह से बजाने वाला सांज ) व सिटी बजाते युवक दिखाई ही देते हैं। यहां विशेष आयोजनों, पर्वों, उत्सव व मान आदि गतिविधियों में लोक वाद्यों का भरपूर उपयोग होता हैं। इतना ही नहीं लोक जीवन के सुःख–दुःख भरे दिनों में भी लोक वाद्यों का अपना उपयोग हैं। ऐसा ही बारेला और भिलालाओं की बस्ती में साईल्ला, पलासला और ढोढय्या देखने में आता हैं। हालांकि ये सभी उत्साह–उमंग के पर्व हैं। दूर्गम पहाड़ियों में निवास करने वाली जाति भील जाति के घरों में किसी सदस्य की मृत्यु होने पर घर के सामने मांदल को एक अलग स्वर में बजाया जाता है। भिलालाओं में दुख के अवसर पर मृदंग और झांज का उपयोग जमकर होता है, जबकि विवाह के दौरान थाली और ढोल बजाया लाता है। खासकर मृदंग और झॉज के साथ महाभारत की कथा, बाबा रामदेव, नानी बाई का मायरा में आदिम जाति का उल्लास नजर आता है। पश्चिम निमाड़ की बारेला और भील जाति में बांसुरी के समान ही घांघु एक कर्णप्रिय संगीत वाद्य स्वंय के द्वारा बनाकर मनोरंजन के लिए बारेला और भीली युवक अपने माथे पर हमेशा ही पगड़ी में बॉधे रखते है। इसके अलावा यहॉ डफ, चंग, घेरा, किंगरी एवं तोनक्या आदि साज का समय–समय पर उम्दा उपयोग होता है।

प.निमाड़ में लोक संगीत के साथ ही लोक नृत्य अन्य स्थानों व समाजों में लोकप्रिय होने लगे है। भंगोरिया नृत्य के साथ–साथ इनका पाळी नृत्य (नृतकों की पाली बनाकर या गोल घेरा बनाकर) व गणगौर नृत्य भी खासे लोकप्रिय हुए है। भंगोरिया नृत्य विशेष रूप से भंगोरिया हाट पर्व के अवसर पर अपनें

रिश्तेदारों, साथी, मित्र यहॉ तक कि पिता–पुत्र भी एकसाथ नृत्य करते है। नृत्य करने वाला संगीतप्रेमी तो बांसुरी या घांघु बजाते हुए भी भंगोरियामय हो लेता हैं। नृत्य करने वाला नृतक हाथों में रूमाल या साथी के गले में हाथ रखकर भी किया जाता है। पाळी नृत्य विवाह अवसरों पर विशेष रूप से किया जाता है। पाळी नृत्य करने वालों की कमर कि लचकन और पैरों का घुमाव देखने योग्य होता है। साथ ही हवा में हाथ में लहराना भी नृत्य का अंग होता है, जो सौंदर्यता प्रदान करता है। यह नृत्य गोल घेरे में तब होता है जब सभी एक तरह से नाचतें है। पाळी नृत्य आमने–सामने होकर भी किया जाता है। आमने–सामने होकर उस स्थिति में नृत्य करते है, जब प्रतियोगिता या युवक–युवतियॉ अलग–अलग होकर नृत्य करते है। ऐसी स्थिति में युवक–युवतियों का नृत्य देखते ही बनता है। नृत्य के बीच मे संगीत बदलने पर नृत्य की शैली में बदलाव करते है। कई नृतक पाळी में भी विविधता लाते है, जिसे देखने वाले लुत्प लेते है। पाळी नृत्य असल में युवक–युवतियों के लिए ही बना है। प.निमाड़ के विवाह समारोह में जब तक पाळी नृत्य नहीं हुआ हो विवाह में रस नहीं आता है। पाळी नृत्य बारात के स्वागत में भी किया जाता है।

## लोकनाट्य

मनोरंजन की दृष्टि से लोक–जीवन में लोकनाट्यों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। लोकनाट्यों का जन्म कब हुआ, यह तो निश्चित रूप से नहीं कहॉ जा सकता। परन्तु फिर भी प. निमाड़ की आदिम जाति लोक जीवन में लोकनाट्य मनोरंजन का स्वस्थ एवं सशक्त माध्यम रहा है। लोकनाट्य में प.निमाड़ का 'गम्मत' को सिरमौर माना जाता है। इसके अलावा साईला, ढोढय्या, फॉग, स्वॉग के समय बारेला और भील अपनी विशेष वेशभुषा से अचंभित कर देती है। रंग बिरंगी वेशभुषा से ऐसा नाट्य प्रस्तुत करते है जो सीधे दिल पर दस्तक देता है। गम्मत प्रारम्भ होने का वाक्या भी अनोखा होता है, गम्मत की सभी तैयारियॉ होने के बाद साजिंदे द्वारा ढोलक और झांज के द्वारा झुरमुट दी जाती है। झुरमुट का मतलब यह होता है कि अब गम्मत प्रारम्भ होता है और कलाकार मंच पर प्रस्तुत होते है। साईला गॉव के करीब 10 से 20 वर्ष तक के बच्चों द्वारा मनाया जाने वाला लोक नाट्य है। मोरगुन के करीब 80 वर्षीय भावसिंह भाई बताते है कि साईला एक तरह से बच्चों का दल बनाकर उनको एकजुट करने का नाट्य है। शरद पूर्णिमा की रात को गॉव के बच्चों की टोलियॉ 10 से 15 बच्चों के दलों में बट जाते है। होली प्रारम्भ होने से पूर्व बारेला और भील जाति में गॉव के पुरूष एवं महिलाऍ एकत्रित होकर अलग तरह से रंग रूप बनाकर साथ में ढोलक, थाली व पेटी लेकर गॉव एवं सड़कों पर निकल पड़ते और फाग मांगते है। सड़को पर चलते नागरिको को रोक कर संगीत के साथ लोक गीत गाते चले जाते है साथ ही हंसी ठिठोली भी करते है।

## गम्मत

गम्मत एक तरह से हंसी, ठिठोली व ठहाके करने का मनोरंजन का साधन है। प.निमाड़ में गम्मत के कई मायने है। निमाड़ी बोली में गम्मत को कई रूप में उपयोग किया जाता है। प.निमाड़ में गम्मत उन 4–6 व्यक्तियों के समुह को कहते है जो गम्मत कर रहे होते है। गम्मत करने वाले व्यक्ति अभिनय करते हुए हंसी–ठिठोली को जन्म देते है। गम्मत करने वाले अभिनेताओं का संवाद इतना बेहतर होता है कि दर्शक गद–गद होकर पेट पकड़ कर हंसने लगते है। साथ ही गम्मत करने वाले अभिनेता अभिनय मस्त मौला अंदाज में करते है कि देखने वाले महसूस करने लगते है कि घटना या कहानी उन्हीं की हो। गम्मत के लिए किसी मंच की जरूरत नहीं होती है। गम्मत के लिए खुला स्थान पर्याप्त होता लेकिन वहॉ इतना स्थान जरूर होना चाहिए कि कहानी में किसी दुसरे गॉव का भी प्रस्तुतिकरण कर सके। गम्मत की शुरूवात ढोलक और झांझ की झुरमट से होती है। ढोलक और झांझ की झुरमट सुनते ही गम्मत करने वाले पात्र दिखाई पड़ते है। कई बार किरदार निभाने वाले व्यक्ति को पहचानना मुश्किल हो जाता है। जबकि किरदार निभाने वाले व्यक्ति स्थानिय ही होते है।

गम्मत के प्रारम्भ में 2–3 किरदार ही कहानी आगे बढाते है। उसके बाद कहानी को आगे बढाने के लिए अन्य पात्र भी प्रस्तुत होते है। गम्मत करने वाले अभिनय करने में दक्ष नहीं होते है फिर भी इस तरह मनमोहक अभिनय करते है कि सबको भा जाते है। गम्मत करने वाले कलाकार पुरूष ही होते है मगर कहानी के अनुसार महिला, बेल, घोड़े, पागल, बिल्ली और कुत्ते का भी किरदार निभाते है। गम्मत में जिस कहानी का प्रस्तुतिकरण किया जाता है वो ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित होती है। गम्मत की कहानियों में किसी व्यक्ति की शहर की यात्रा तीर्थ का विवरण या खेती आधारित जीवन पर केन्द्रित होती है। प.निमाड़ के कई गॉवों में गम्मत का समय व तिथि निर्धारित होती है। जैसे किसी वार्षिक आयोजन, चैत्र नवरात्रा, दिपावली, मान या शादी के अवसर पर गॉव के पटेल या सरपंच द्वारा आयोजित किया जाता है।

## साईला

साईला का शाब्दिक अर्थ साल का या साल में लिया जाने वाला होता है। प.निमाड़ में यह शरद पूर्णिमा की रात को साईला के रूप में मनाया जाता है। इस दिन अन्य समाज में गुरूपुजा के रूप में मनाया जाता है। इस दिन चॉदनी रात में भिलाला जाति की बस्तियों में साईला पर्व बच्चों द्वारा पुरी उमंग और विश्वास के साथ मनाया जाता है। साईला मानसून की फसल जब घर आने लगती है या आ चुकी हांती है,

उन्हीं दिनों में साईला पर्व का आयोजन होता है। साईला मनाने से एक–दो दिन पूर्व गॉव के बच्चें अपनी–अपनी टोलियों के लिए दल बनाने के लिए मंत्रणा करते है। कासेल गॉव के 85 वर्षीय बाबा हिचके (झुला) पर बैठे–बैठे बताते है कि जब वे सबकुछ जानने समझने के योग्य थे। उस समय साईला को लेकर माहौल सचमुच कमाल का हुआ करता था। हमारे लिए साईला मांगकर उनके दल के लिए उत्तम संगीत साधन, लाया करते थे। सामाजिक तौर पर साईला दौरान गॉव के हर घर में रात को हाथों में ज्वार का टोटा लेकर झोपला (घर का प्रवेश द्वार) पर पहुॅचते थे। साथ ही लोक गीत के साथ उनके ऑगन में खड़े होकर दल के सदस्यों द्वारा लोकगीत गाए जाते है। घर का मुखियॉ टोली में शामिल बच्चों को पहचानने की प्रकिया भी करते है। क्योंकि यहॉ कहीं और रह रहे बच्चें जो अब तक बाहर मामा या रिश्तेदारों के घरो से लौटने लगते है। मुखिया यह भी जानने का प्रयास करता किसके घर कौन सी उपज अच्छी हुई है। बच्चों को खुशी से दुध दही, मक्खन आदि भी परोसा जाता है। भेंट के तौर पर मुखियॉं द्वारा जिसकी की फसल ज्यादा हुई होती है भेंट करता है, एक गॉव में कम से कम 10 टोलियॉ तो होती है। ये टोलियॉ समी भेंट को एकत्रित कर बेंच देते है और उस राशि से कोई उपयोगी वस्तु खरीदने पर योजना बनती है। तकियापुर के शोबिया बताते है कि उन्होने साईला मांगकर ही तेजा बाबा की ख्याल (नाटक या रंगमंच करने के लिए) के लिए सामग्री खरीदी थी।

## ढोढय्या

प. निमाड़ में कृषि कार्यो में सलंग्न भिलालों के बच्चों द्वारा एक अनोखा लोक उत्सव मनाया जाता है जो अच्छी वर्षा को लेकर प्रेरित है। इस समाज के बच्चों में ढोढय्या को लेकर जो उत्साह दिखाई देता है ऐसा किसी अन्य उत्सव में नहीं देखा जा सकता । इसमें चार वर्ष से लगभग 14 वर्ष के बच्चे शामिल होकर उत्सव मनाते है। गंगाबाई सोलंकी बताती है कि ज्येष्ठ माह की अमोस (अमावस्या) को छोटे बच्चे जो अब तक गिल्ली डण्डा, कंचे, भंवरी व कुंडल खेलने में व्यस्त होते है। वे इस दिन विभिन्न समुहों में बंटकर घर–घर जाकर ढोढय्या मांगते है। बच्चों में बालिकाओं का अलग व बालकों का अलग समुह होता है। इन प्रत्येक समुहों में एक–एक बालक बालिका को ढोढी बनाया जाता है। जिसके सर पर खाखरे (पलाश) के पत्ते रखे जाते है। फिर ये बालक बालिका जो 10 से 15 के समुह में होते है। प्रत्येक घर जाकर जो आटा व दाल मांगते है और लोकगीत गाते है। श्रृद्वा से देने वाले घर के सदस्य दल के ढोढी से वर्षा कैसी होगी कब तक होगी किस दिशा से होगी और फसल के लिए कैसी होगी ? इस तरह के प्रश्न भी पुछते है।

पुरे दिन भर बच्चों की टोली गॉव में घुमकर बाल लोकगीत गाते हुए गुजरती है। दिन ढलते समय ये बच्चे किसी के किनारे या अपने खेतों में या पानी वाले स्थानों पर जाते है और वहॉ दाल बाटी या दाल पानिये बनाकर पिकनिक मनाते है। खाना खाने से पूर्व जो बालक ढोढा व जो बालिका ढोढी बनती है उसे पानी में डुबकर पानिये या बाटी का एक निवाला खाना पड़ता है। इस समय पानी में डुबे ढोढा या ढोढी पर कोयला या कण्डा (उपला) फेंका जाता है।